आज का पुरुषार्थ 7 Sept 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"अगर निर्विघ्न जीवन जीना है तो.. मनमुटाव नहीं .. सब एक दूसरे को स्नेह करे, सहयोग करे और सम्मान देते चले "*

हम सभी संगठनों में रहते है। हमारा परिवार भी सुन्दर संगठन होता है।

परिवारों में प्यार रहे, तनाव न रहे। सम्बन्ध हमारे **सुखदाई** हो जाये। सब एक दूसरे को **स्नेह, सहयोग और सम्मान** देने लगे। यदि ऐसा होने लगे तो मनुष्य को जीवन जीने का **सुख** प्राप्त होता है।

आजकल संसार में, **सम्बन्धों में समस्यायें** बढ़ती जा रही है। और तनावग्रस्त होने के कारण और माया का force होने के कारण लोग व्यसनों के शिकार होते जा रहे है।

कई लोग तो अपने **वासनाओं** को दवाने के लिए **व्यसनों** का आधार लेते है। परन्तु व्यसनों से वासनायें बढ़ती है। घटती नहीं है।

हम बाबा के बच्चे है। हमारे पास **ईश्वरीय शक्तियाँ** है। हम अपनी शक्तियों को पहचाने। और याद रखें, जितना हमारा सर्व शक्तियाँ बढ़ती जायेंगी, जीवन निर्विघ्न होता जायेगा। यह अटोमेटिक है। विघ्न आयेंगे ही नहीं।

इसलिए बहुत अच्छा अभ्यास हमें रखना चाहिए ..

" मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ .. बाबा की शक्तियाँ मेरे पास है "

इस सत्य को रियेलाइज करे। इस सत्य को स्वीकार करे। केवल कहने रटने की बात नहीं है।

हम सर्वशक्तिमान के बच्चे बहुत शक्तिशाली है। उसकी शक्तियाँ हममें थी। लेकिन जब बाबा आ गये, तो उसने अपनी बहुत सारी शक्तियाँ दे दी है।

और फिर जितना जितना हम **योग** लगाते है, हमारी आंतरिक **शक्तियाँ** बढ़ती जाती है। तो हम बनते जाते **मास्टर सर्वशक्तिमान।**

और यदि हम इसकी स्मृति बार-बार लायेंगे। शक्तियाँ तो हमारे पास है, लेकिन उनकी **स्मृति** लाना आवश्यक है।

यदि बार-बार उनकी स्मृति लायेंगे, **तो सोई हुई शक्तियाँ जागृत रहेगी।** शक्तियाँ active रहेगी। वह कार्य करती रहेगी, और हमारा कार्य निर्विघ्न रूप से सफल होते रहेंगे।

तो हम **संगठनों** में चलते हुए, **परिवारों** में रहते हुए, अपने को **मोल्ड** करते चले। अपने को झुका कर चले। दुसरों के बातों को सम्मान देकर चले।

जो व्यक्ति मुड़ता है, वह सहज ही मंजिल पर पहुँच जाता है।
संसार में भी देखें .. किस वस्तु को हम mould सकते है? **जो नरम है।**
एक नरम gold आराम से मुड़ जाता है। लोहे को मोड़ने लिए भी उसे गरम करना पड़ता है।

यदि हम **स्वमान की गर्मी** अपने अंदर धारण करे .. यह स्वमान, इस ईश्वरीय नशा में इतनी गर्मी है, जो हमें सरलचित्त बना देता है। और हमारे लिए स्वयं को मोल्ड करना बहुत सहज हो जाता है।

हम मुड़े, हम झुके तो सचमुच दूसरा भी मुड़ने लगेगा और झुकने लगेगा। इससे हमारे सम्बन्धों में **अमृत** घुल जायैगा।

तो आज सारा दिन अभ्यास करेंगे ..

" मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ .. सम्पूर्ण निरहंकारी हूँ "

परमधाम में सर्वशक्तिमान को visualise करेंगे ..

" उनकी शक्तियों के किरणें मुझ में समा रही है "

मानो ...

" उपर से सर्वशक्तिमान की शक्तियों की वरसात हो रही है .. यह किरणें हममें समा रही है .. हमारे विकर्मो को नष्ट कर रही है "

आज सारा दिन इसका आनन्द लेंगे ...

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org